2

प्रेमचंद

हिन्दी के महान कथाकार प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई,1880 को बनारस के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता और शिक्षा बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की; परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और वे लेखन-कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। 8 अक्टूबर, 1936 को इस महान साहित्यकार का देहांत हो गया।

प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के आठ भागों में संकलित हैं। **सेवासदन**, **प्रेमाश्रम**, **रंगभूमि**, **कायाकल्प**, **निर्मला**, **गबन**, **कर्मभूमि**, **गोदान** उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने **हंस**, **जागरण**, **माधुरी** आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी प्रचुर मात्रा में किया। आप साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया उसकी अभिव्यक्ति उन्होंने कथा-साहित्य में की। किसानों और मज़दूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद का साहित्य मूलतः समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित है। वह अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करता है।

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज, मुहावरेदार और पात्रानुकूल है।

≈ **'परीक्षा'** कहानी प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने अफसर या अधिकारी के चयन में विद्वता के अतिरिक्त दया, परोपकार की भावना, कर्त्तव्य-परायणता जैसे सद्‌गुणों पर अधिक बल दिया है। सच्चे अर्थों में मनुष्य केवल विद्या और ऊँची उपाधियों से महान नहीं होता; बल्कि उसके हृदय में संचित प्रेम-भावना ही उसे महान बनाती है। प्रेमचंद की यह बहुचर्चित कहानी इसी विचार-धारा से संपुष्ट है। कहानी में दिखाया गया है कि सुजानसिंह ने रियासत के दीवान पद के लिए उम्मीदवारों की परीक्षा किस प्रकार ली।

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए, तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनय की, ''दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की। अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हैं। दूसरे, अब अवस्था भी ढल गई। राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रह गई। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।''

राजा-साहब अपने अनुभवशील और नीति-कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना तो हारकर उन्होंने प्रार्थना स्वीकर कर ली। पर, शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला- ''देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है। जो सज्जन अपने को इस काम के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं कि वे ग्रेजुएट हों; मगर उन्हें पुष्ट होना आवश्यक है। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।''

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। कोई पंजाब से चला आता, तो कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी था, कोई पुरानी सादगी पर मिटता हुआ था। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर '**अ**' नौ बजे दिन तक सोया करते थे; आजकल वे बगीचे में टहलते उषा के दर्शन करते थे। मिस्टर '**ब**' को हुक्का पीने की लत थी, परंतु आजकल बहुत रात गए, किवाड़ बंद करके अंधेरे में सिगरेट पीते थे। मिस्टर '**स**,' '**द**' और '**ज**' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था; लेकिन, ये सज्जन आजकल '**आप**' और '**जनाब**' के बगैर नौकर से बातचीत नहीं करते थे। महाशय '**क**' नास्तिक थे; मगर, आजकल उनकी धर्म-निष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती! मिस्टर '**ल**' को किताबों से घृणा थी; परंतु आजकल वे बड़े-बड़े धर्म-ग्रंथ खोले, पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बातचीत कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता मालूम होता था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है; किसी तरह काट लें। कहीं कार्य सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है?

लेकिन, मनुष्य का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है। एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर विद्या है। इसे क्यों

छिपाकर रखे? संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाएँ।

चलिए, तय हो गया। कोर्ट बन गए! खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के 'अप्रेंटिस' की तरह ठोकरें खाने लगी। रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराला था। खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद लेकर तेज़ी से उठते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली जाती है। लेकिन, दूसरी ओर खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए। लेकिन, हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उसपर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए उस नाले में आया; लेकिन, कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथों से ढकेलता। लेकिन, बोझ अधिक था गाड़ी फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता; मगर, वहाँ कोई सहायक नज़र न आता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी नहीं सकता था। विपत्ति में फँसा हुआ था।

इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए झूमते-झामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा; परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा; मगर बंद आँखों से। उनमें सहानुभूति का नाम न था। लेकिन, उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस

था। आज हॉकी खेलते हुए, उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। किसान को देखते ही सब बात ज्ञात हो गई। हॉकी-स्टिक किनारे पर रख दी, कोट उतार डाला और किसान के पास आकर बोला,- "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा कि एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला- "हुजूर; मैं आपसे कैसे कहूँ!"

युवक ने कहा- "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा! तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधों; मैं पहियों को ढकेलता हूँ। अभी गाड़ी ऊपर जाती है।"

किसान गाड़ी पर आकर बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटनों तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

उसने फिर ज़ोर लगाया। उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला। उनकी हिम्मत बँध गई। उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया। बस! गाड़ी नाले की ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला- "महाराज! आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा-"आप मुझे कुछ इनाम देंगे?"

किसान ने गंभीर भाव से कहा-"नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।" युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ। क्या ये सुजानसिंह तो नहीं? आवाज मिलती-जुलती है। चेहरा-मोहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से

देखा। शायद वह उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला-"गहरे पानी में पैठने से मोती मिलता है।"

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे; न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा-दृष्टि होगी। संध्या-समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी और दीवानी के उम्मदीवारों के समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए आ विराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा-"मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी। हृदय वही है, जो उदार हो; आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे; और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम होते हैं और जो हैं,वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारी और रईसों ने पं. जानकीनाथ की तरफ देखा और उम्मीदवारों के दल की आँखें उधर उठीं; मगर,उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार-साहब ने फिर फरमाया-"आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होने पर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के

ऊपर चढ़ाए, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का निवास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए; परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।''

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. पूर्ण वाक्य में दो :

(क) 'परीक्षा' कहानी में किस पद के लिए परीक्षा ली गई है?

(ख) दीवान साहब के समक्ष क्या शर्त रखी गई?

(ग) 'परीक्षा' कहानी में उम्मीदवार कौन-सा सामूहिक खेल खेलते हैं?

(घ) दीवान के पद के लिए किसका चयन किया गया?

2. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) दीवान सुजानसिंह ने महाराज से क्या प्रार्थना की? क्यों?

(ख) उम्मीदवार विभिन्न प्रकार के अभिनय कैसे और क्यों कर रहे थे?

(ग) एक उम्मीदवार ने गाड़ीवाले की मदद कैसे की ?

(घ) किसान ने अपने मददगार युवक से क्या कहा? उसका क्या अर्थ था?

(ङ) सुजानसिंह ने उम्मीदवारों की परीक्षा कैसे ली?

(च) पं० जानकीनाथ में कौन-कौन से गुण थे?

(छ) सुजानसिंह के मतानुसार दीवान में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

3. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) लेकिन, मनुष्य का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

(ख) गहरे पानी में बैठने से मोती मिलता है।

(ग) उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

4. किसने किससे कहा, लिखो :

(क) कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में में मिल जाए।

(ख) मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो।

(ग) नारायण चाहेंगे तो दिवानी आपको ही मिलेगी।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **नीचे लिखी संज्ञाओं में जातिवाचक, व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ पहचानो :**

   देवगढ़, शक्ति, दीवान, जानकीनाथ, सादगी, अंगरखे, हंस, पुल, दया शिखर, नारायण, खिलाड़ी

2. '**अनुभवशील**' शब्द में '**अनुभव**' तथा '**शील**' शब्दों का योग है। इसका अर्थ है **अनुभवी**। '**शील**' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाओ।

3. **निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तित करो :**

   (क) खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे। (सामान्य वर्तमान)

   (ख) लंबा आदमी सामने खड़ा है। (पूर्ण भूतकाल)

   (ग) ऐसे गुणवाले संसार में कम होते हैं। (सामान्य भविष्य)

4. दो शब्दों में यदि पहले शब्द के अंत में 'अ' ,'आ' हो और बाद के शब्द के आरंभ में 'इ', 'ई' या 'उ','ऊ' हो तो उन दोनों में संधि होने पर क्रमशः 'ए', अथवा 'औ' हो जाता है; जैसे- देव+इंद्र =देवेंद्र, महा+ईश =महेश, मंत्र+उच्चारण=मंत्रोच्चारण, पर+उपकार=परोपकार।

   नीचे लिखे शब्दों में संधि करो -

   प्रश्न +उत्तर, गण+ईश, वीर+इंद्र, सूर्य+उदय, यथा+इच्छा

5. **विलोम शब्द लिखो :**

   सज्जन, उपस्थित, उपयुक्त, अपकार

योग्यता-विस्तार

1. तुमने कभी किसी संकट में फँसे व्यक्ति की मदद की है ? अगर 'हाँ' तो अपना अनुभव लिखो।
2. अवसर मिलने पर प्रेमचंद की कहानियों का रसास्वादन लो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

रियासत	=	राज्य, प्रांत
प्रबंध	=	व्यवस्था, इंतजाम
नास्तिक	=	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला
पदच्युत	=	बर्खास्त
घृणा	=	नफरत
अवस्था	=	दशा, उम्र
निर्णय	=	फैसला
पहिया	=	गाड़ी का चक्का
हिम्मत न हारना	=	साहस न छोड़ना
उम्मीदवार	=	प्रार्थी
नसीब	=	भाग्य, किस्मत
कलेजा धड़कना	=	बेचैन होना, व्याकुल होना
निदान	=	समाधान
धनाढ्य	=	अमीर
संकल्प	=	निश्चय, इरादा